

---

.. shrii gaayatrii chaaliisaa ..

॥ श्री गायत्री चालीसा ॥

---

हीं श्रीं क्लीं मेधा प्रभा जीवन ज्योति प्रचण्ड ॥  
शान्ति कान्ति जागृत प्रगति रचना शक्ति अखण्ड ॥ १ ॥

जगत जननी मङ्गल करनिं गायत्री सुखधाम ।  
प्रणवों सावित्री स्वधा स्वाहा पूरन काम ॥ २ ॥

भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी ।  
गायत्री नित कलिमल दहनी ॥ ३ ॥

अक्षर चौविस परम पुनीता ।  
इनमें बसें शास्त्र श्रुति गीता ॥ ४ ॥

शाश्वत सतोगुणी सत रूपा ।  
सत्य सनातन सुधा अनूपा ।  
हंसारूढ सितंबर धारी ।  
स्वर्ण कान्ति शुचि गगन-बिहारी ॥ ५ ॥

पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला ।  
शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला ॥ ६ ॥

ध्यान धरत पुलकित हित होई ।  
सुख उपजत दुःख दुर्मति खोई ॥ ७ ॥

कामधेनु तुम सुर तरु छाया ।  
निराकार की अद्भुत माया ॥ ८ ॥

तुम्हरी शरण गहै जो कोई ।  
तरै सकल संकट सों सोई ॥ ९ ॥

सरस्वती लक्ष्मी तुम काली ।  
दिपै तुम्हारी ज्योति निराली ॥ १० ॥

तुम्हरी महिमा पार न पावें ।  
जो शारद शत मुख गुन गावें ॥ ११ ॥

चार वेद की मात पुनीता ।  
तुम ब्रह्माणी गौरी सीता ॥ १२ ॥

महामन्त्र जितने जग माहीं ।  
कोई गायत्री सम नाहीं ॥ १३ ॥

सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै ।  
आलस पाप अविद्या नासै ॥ १४ ॥

सृष्टि बीज जग जननि भवानी ।  
कालरात्रि वरदा कल्याणी ॥ १५ ॥

ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते ।  
तुम सों पावें सुरता तेते ॥ १६ ॥

तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे ।  
जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे ॥ १७ ॥

महिमा अपरम्पार तुम्हारी ।  
जय जय जय त्रिपदा भयहारी ॥ १८ ॥

पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना ।  
तुम सम अधिक न जगमे आना ॥ १९ ॥

तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा ।  
तुमहिं पाय कछु रहै न कलेसा ॥ २० ॥

जानत तुमहिं तुमहिं है जाई ।  
पारस परसि कुधातु सुहाई ॥ २१ ॥

तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाई ।  
माता तुम सब ठौर समाई ॥ २२ ॥

ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे ।  
सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे ॥२३॥

सकल सृष्टि की प्राण विधाता ।  
पालक पोषक नाशक त्राता ॥ २४ ॥

मातेश्वरी दया व्रत धारी ।  
तुम सन तरे पातकी भारी ॥ २५ ॥

जापर कृपा तुम्हारी होई ।  
तापर कृपा करें सब कोई ॥ २६ ॥

मंद बुद्धि ते बुधि बल पावें ।  
रोगी रोग रहित हो जावें ॥ २७ ॥

दरिद्र मिटै कटै सब पीरा ।  
नाशै दूःख हरै भव भीरा ॥ २८ ॥

गृह क्लेश चित चिन्ता भारी ।  
नासै गायत्री भय हारी ॥२९॥

सन्तति हीन सुसन्तति पावें ।  
सुख संपति युत मोद मनावें ॥ ३० ॥

भूत पिशाच सबै भय खावें ।  
यम के दूत निकट नहिं आवें ॥ ३१ ॥

जे सधवा सुमिरें चित ठाई ।  
अच्छत सुहाग सदा शुबदाई ॥ ३२ ॥

घर वर सुख प्रद लहै कुमारी ।  
विधवा रहें सत्य व्रत धारी ॥ ३३ ॥

जयति जयति जगदंब भवानी ।  
तुम सम थोर दयालु न दानी ॥ ३४ ॥

जो सद्गुरु सो दीक्षा पावे ।  
सो साधन को सफल बनावे ॥ ३५ ॥

सुमिरन करे सुरूयि बडभागी ।  
लहै मनोरथ गृही विरागी ॥ ३६ ॥

अष्ट सिद्धि नवनिधि की दाता ।  
सब समर्थ गायत्री माता ॥ ३७ ॥

ऋषि मुनि यती तपस्वी योगी ।  
आरत अर्थी चिन्तित भोगी ॥ ३८ ॥

जो जो शरण तुम्हारी आवें ।  
सो सो मन वाञ्छित फल पावें ॥ ३९ ॥

बल बुधि विद्या शील स्वभाओ ।  
धन वैभव यश तेज उच्छाओ ॥ ४० ॥

सकल बढें उपजें सुख नाना ।  
जे यह पाठ करै धरि ध्याना ॥

यह चालीसा भक्ति युत पाठ करै जो कोई ।  
तापर कृपा प्रसन्नता गायत्री की होय ॥